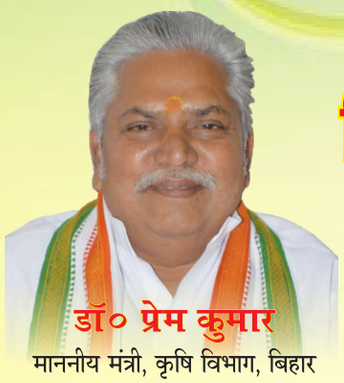

डॉ० प्रेम कुमार
माननीय मंत्री, कृषि विभाग, बिहार

# किसान भाइयों एवं बहनों से
# अपील

बिहार सरकार
कृषि विभाग

**सामान्यतया यह देखा जा रहा है किसान भाई/बहन फसलों के अवशेष (पुआल, भूसा आदि) को खेतों में जला देते हैं। ऐसा करने से मिट्टी पर निम्नांकित बूरा प्रभाव पड़ता है—**

- फसल अवशेषों को जलाने से मिट्टी का तापमान बढ़ता है, जिसके कारण मिट्टी में उपलब्ध जैविक कार्बन, जो पहले से ही हमारी मिट्टी में कम हैं और भी जलकर नष्ट हो जाते हैं। फलस्वरूप मिट्टी की उर्वरा–शक्ति क्षीण हो जाती है।
- फसल अवशेषों को जलाने से मिट्टी का तापमान बढ़ने के कारण मिट्टी में उपलब्ध सूक्ष्म जीवाणु, केंचुआ आदि मर जाते हैं। इनके मिट्टी में रहने से ही मिट्टी 'जीवन्त' कहलाता है। अवशेषों को जलाने से हम मिट्टी को 'मरनासन' अवस्था की ओर ले जा रहे हैं।
- फसल अवशेषों को जलाने से मिट्टी में विद्यमान जरूरी पोषक तत्व एवं मित्र–कीट नष्ट हो जाते हैं।
- फसल अवशेषों को जलाने से मिट्टी में नाईट्रोजन की भी कमी हो जाती है, जिसके कारण फसल उत्पादन भी बहुत कम हो होती है।
- फसल अवशेषों को जलाने से वायुमण्डल में कार्बनडाई ऑक्साइड ($CO_2$) की मात्रा बहुत बढ़ जाती है, जिसके कारण वातावरण बहुत प्रदूषित हो जाता है एवं जलवायु परिवर्तन का कारण बनता है।
- एक टन फसल अवशेष जलने से लगभग 60 कि०ग्रा० कार्बन मोनोऑक्साइड, 1460 कि०ग्रा० कार्बन डाईऑक्साइड तथा 2 कि०ग्रा० सल्फर डाईऑक्साइड गैस निकलकर वातावरण में फैलता है, जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुँचता है।

**अतः आप सभी किसान भाइयों एवं बहनों से अपील है कि—**

- यदि फसल की कटनी हार्वेस्टर से की गई हो तो खेत में फसलों के अवशेष (पुआल, भूसा आदि) को जलाने के बदले खेत की सफाई हेतु स्ट्रा बेलर/स्ट्रा रीपर मशीन का प्रयोग करें।
- अपने फसल के अवशेषों को खेतों में जलाने के बदले वर्मी कम्पोस्ट बनाने, मिट्टी में मिलाने, पलवार विधि **(Mulching)** से खेती, मशरूम की खेती आदि में व्यवहार कर मिट्टी को बचायें तथा संधारणीय कृषि पद्धति में अपना योगदान दें।

नोट : अधिक जानकारी के लिये किसान भाई/बहन अपने जिला के किसान सलाहकार/कृषि समन्वक/प्रखंड कृषि पदा० सम्पर्क करें।

**खेत की मिट्टी करे पुकार।**
**मत जलाओ लार–पुवार।।**

प्रकाशक : विजय कुमार द्विवेदी, बि०कृ०से०
परियोजना निदेशक, रोहतास)
टेली–फैक्स : 06184-221052

Vidya Printers, Patna # 9234849923